आपातकाल
में
सृजन फुलवारी

प्रज्ञा सुमेध जायसवाल

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

प्रज्ञा सुमेध जायसवाल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-190-9
संपादक -डॉ .प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्रसंदीप कुमार सोनी -, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय -15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (.प्र.म)481331
दूरभाष (.कार्या) -07633-253159
मोबाईल -9424765259
ईमेल -antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट -www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण -2020, प्रज्ञा सुमेध जायसवाल
मूल्य -50.रूपये 00
मुद्रकशैलू कम्प्यूटर्स -, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY ANITA MANDILWAR 'SAPANA'
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना)covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीपटीना सोनी-, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	आज का इंसा	6
2.	संघर्ष जीवन की नैया	7
3.	अंतरा	8
4.	आशा	9
5.	बेहोश	10
6.	ईश्वर का अवतार है साधू	11
7.	देश प्रेम	12
8.	भाई बहन	12
9.	श्री कृष्ण मुरारी	13
10.	दर्पण	14
11.	यादे	15
12.	हमे अब आगे बढ़ना होगा	16
13.	अनमोल जीवन	17
14.	अंतरा की राग	18
15.	शब्द शक्ति	19
16.	प्रीत की रीत	20-21

आज का इंसा

अपनी तकदीर से लड़ता,
आज का इंसा,
कहि कैद है आज का इंसा,
जो कभी उड़ते पंछी की तरह,
सैर पर निकल पड़ता था,
आज वो कैद है इंसा।
खामोश गलिया है,
वो रास्ते भी मदहोश है,
दहशत में दुनिया है,
मिला नही वो घर से,
नजाने किस हाल में,
मेरी गुड़िया है।
भूखा हू मैं तो क्या,
उन भूखो का निवाला,
बन जाता हूं,
अपने देशवासियों की मदद में,
मैं जीजान से जुट जाता हूं।
फिक्र मुझे न जिंदगी की है,
कुर्बानी अपनी दे जाता हूं,
मेरे मुल्क में अमन चैन रहे,
बस यही दुआ में कर जाता हूं।
मैं पुलिस प्रशासन, डॉक्टर,
सफाई कर्मी हूं,
मुझे फिक्र नही अपनी,
मैं अपने वतन की,
फिक्र कर जाता हूं।
आज नही तो क्या,
कल घर आँगन में खेलूंगा,
अपनी बेटी के साथ,
मैं भी फिर सैर करुगा,
हालातो ने घेरा है,
उस की झलक नही देखी मैंने।
आज हालातो से लड़ना है,
मुझे देश रक्षा करना है,
जिन घरों के बुझे चिराग।
उनको मुझे रोशन करना है,
तकदीरों से लड़ते इंसा को,
आजाद मुझे भी करना है,
अपनो की फिक्र सता रही,
मुझे अपनी फिक्र से क्या डरना
है।

संघर्ष जीवन की नैया

न जाने कितनी परीक्षा होती है,
संघर्ष जीवन की नैया,
लहरों से लड़के पार होती है,
चुनौतियाँ ही चुनौतियाँ राहों में,
सवालो से घिरी जिंदगी होती है।
जवाब हम दे तो भी बुरे होते है,
न दे तो भी छले होते है,
कहे वो हम मनचले होते है
कंबख्त समझना सहज नही,
अपनी जिंदगी से खेले होते है।
पनो को भी गैर लगते है,
हर वक्त जहर लगते है,
बनाने अपना उन्हें हम,
हमारी सारी कसर झोंक देते है,
फिर भी हम फरेब से भरे होते है।

अंतरा

शब्दो की शक्ति है, अंतरा का खजाना है,
सुनना हो यदि गीत गजल, तो यहां जरूर आना है।
महफिले है साहित्यकारो की,
कहानी, लघु कथा सुनाना है,
भारत के सब प्रांतो से,
नाता हमारा अब पुराना है।

जुड़े है जड़ की तरह,डालियां बिखरी सी है,
पत्ते अभी हरे है, अब साहित्य सुमन खिलाना है।
अंतरा के राग में,
गीत गुन गुनाना है,
जुड़े स्नेह के धागों से,
हमे प्रीत फिजा में फैलाना है।

शत शत नमन है सुराना को,जो जड़ चैतन्य सजना है,
रिश्ता न खून का,फिर भी उसने सबको अपना बनाना है।
अंतरा के तरानों में,
सरगम की लहर बन जाना है,
प्रीत की रीत का क्या कहना,
उसे हम दिल से चाहना है।

आशा

दिल की आशा है
अखि में पले,
सपनों की नौका में,
सवार हो हम चले,
इन समंदरी नीर से,
लड़ते लड़ते कहिं दूर।
कुछ शिकवे है,
तो कुछ शिकायते है,
वो नीर की लहर,
अक्सर आकर बाहा जाती है।
इन आँखों मे पले,
सपनो के रत्नों को,
वो खुशिया भी,
अधूरी सी रह जाती है,
ख्वाहिशो का ठिकाना नही होता।
कही सवालो के,
घेरे होते है,
तो कही घेरे में सवाल,
जवान थकती नही,
विश्वास होता नही।
बस युं ही पिजते है जाम,
जिजते है जिंदगी,
लडजती है नोका,
समंदर की लहरों से,
पले ख्वाब ख़्वाहिशों के डूबते जाते है।

बेहोश

होश खोता, होश में रहकर,
पिया न जाम,
फिर भी बेहोश, नजर आता इंसा।

वो देख आखो पर, खुली पट्टी सी बंधी मानो,
वो फरेबी में बंधा, झूटी बातो से,
गुथा मानो मोतियों का हार।

मजबुर है या है मजबूरी,
जीवन संगनी से परे, औरो का प्रेमी,
बना आज का इंसा, खामोशी का साया है।

खड़े मुक़दर्शी बन आया है,
उछलती इज्जत सभा में, जैसे द्रोपती का चिर हरण,
वो इज्जत मिट्टी में मिलाया है।

हिसाब अपनो का लगाये वो,
किताब मैलि है उनकी, ये समझ नही आना है,
देर है उस के दर पर, अंधेर नही ये बताना है।

ईश्वर का अवतार है साधू

ईश्वर का अवतार है साधू
जीवन का अधार है साधु,
साधू बिन साध नही है,
धर्म संस्क्रति का सार है साधू।

वेद पुराण के प्राण बने है,
ईश्वर का आधार बने है,
साधू संत से दुनिया सारी,
बिन साधू ये विनाश बने है।

गुरु बिन ज्ञान नही है साधू,
साधू बिन अज्ञानी कहे है,
शिक्षा दीक्षा आधार है साधू,
मरियादा पुरषोत्तम राम बने है।

जो पूजे साधू को हर घर में,
उस घर जीवन धन्य बने है,
जिस घर साधू अनादर होवे,
विनाश वो जीवन नाश बने है।

देश प्रेम

जातपात को भूल चलो मन, एक सूत्र धारक बनकर तुम,
अंधियारे में दीपक को जलाने, निकलो बन राम कृष्ण परमहंस।

मिटा राग द्वेष देश से, भगवा को धारण कर लो तुम,
देश बचाने द्वेष मिटाने, देश प्रेम की राग भजो तूम।

नर नारी नारायणी बन कर, संस्कारो के सरताज बनो तुम,
टूटे न कभी देश प्रेम ये, भगत सिंह आजाद बनो तुम।

भाई बहन

भाई बहन का, रिश्ता न्यारा,
सब रिश्तों में, सबसे प्यारा।
आँगन की कली,
खिली सुमन, सी प्यारी बहना,
भाई की दुलारी बहना।
इस रिश्ते का, न कोई मोल,
भाई बहन का, रिश्ता है अनमोल।

श्री कृष्ण मुरारी

नटवर नागर नन्द मुरारी,
मुरली धर कान्हा बनवारी,
मोर मुकुट पीताम्बर धारी,
वैजंती माला तुमको प्यारी।

सुदामा के सखा बन कर कान्हा,
कष्ट हरे तुम बन के हरि रामा,
मीरा के तुम गिरधर नागर,
वश अम्रत बना कृपा तुमरी पाकर।

अनाथो के तुम हो नाथ,
जीवन में रहे तेरा साथ,
तुझबिन अधूरा हू मैं नाथ,
पुकार रहा प्रभु जोड़ के हाथ।

कष्ट हरो आजाओ धरापर,
नाशकरो पापी का नाथ,
मार कंस को पाप मिटाया,
अब दर्शन दो आओ नाथ।

दर्पण

दर्पण का प्रतिबिंब,
सच बोलता प्रतिबिंब,
कितने राज खोलता,
मुख मुद्रिका टटोलता।

दर्पण का प्रतिबिंब,
बोलता प्रतिबिंब,
होसलो की उड़ान भरता,
अपने आप से बाते करता।

झूठ उससे दूर रहते,
सत्य के वो साथ चलता,
आईना है उसका देखो,
आईने में देखता वो।

दाग है या दागी वो है,
अनगिनत वो सवाल करता,
दर्पण से वो बात करता,
अनगिनत सवालात करता।

यादें

यादों की किताब, बाते वो बेहिसाब,
बखूबी छा जाती है,
पलो को भीगो,
चलचित्र सी, बन जाती है।
वो कसक उनकी,
वो लम्हो में जी जाती है,
जब वो यादों की,
किताब खुल जाती है,
दिन बन जाता और
रात वो गुजर जाती है।
हम कुछ इस कदर, खो जाते है,
उन सपनों में सो जाते है,
मानो वो दिन लॉट आया है,
हमे फिर सताया है,
बातों ने हमे रुलाया है।
कहीं है तो खूब हंसाया है,
मानो एकांत में,
हमे पागल बनाया है,
यादों ने हमे तड़पाया है,
नीद चुरा बेचैन हमे बनाया है,
यादों ने हमे कुछ इस कदर तड़पाया है।

हमे अब आगे बढ़ना होगा

कोरे कागज सी,
ये जिंदगी में कुछ,
करना होगा,
हमे अब आगे बढ़ना होगा।

रंगीन दुनिया के,
कुछ चुनिंदा रंगों से,
आज रंगना होगा,
हमे अब आगे बढ़ना होगा।

चुनौतियो से हमे,
आज अब लड़ना होगा,
जीवन मे अगर,
कुछ करना होगा।

लाख लगे वो,
दूर डगर तो,
चाहे पड़े हो शूल मगर वो,
पथ नही छोड़ना होगा।

सामना वो सामने से,
उस हर शख्स के,
करना होगा,
हमे अब आगे बढ़ना होगा।

अनमोल जीवन

अनमोल जीवन,
जीविका मोल है,
जैसे नदी में वारी अनमोल है।
पंकज दल दल,
रहता सहता,
खिलता कहता,
स्वच्छ चरित्र मुख मुस्काता रहता।
जीवन के हर,
दिन लड़ता जाता,
रंग नही बदला फिरभी,
दलदल को वह अपनाता।
नन्ही सी चींटी देखो,
अनुशासन हमे सिखलाती,
काटो में पला गुलाब,
खुश रहो हमेशा यह बतलाता।
सूरज की किरणें देखो,
रोशन करता घर आँगन,
कोयल की मीठी बोली,
मीठे बोल है बुलवाती।
सिख ने की उम्र नही,
सीखने का न समय,
जीवन भर सीखो यारो,
जीवन है अनमोल।

अंतरा की राग

अंतरा की राग ने,
जो कर दिया प्रयास ये,
आपातकाल भी डरा,
कोरोना छुप के रह गया।
मिला वो साथ साथियों का,
एकता की राग में,
मिटाने फिर निकल पड़े,
महामारी से बचाव के।
वो जागरुक हुए नगर,
सुने वो बात ध्यान से,
कविता हथियार बन,
लड़े वो एक साथ मे।
ये समय भी क्या कठोर है,
बना वो दुश्मन घोर है,
बिगड़े हालातो में भी हम,
साथ साथ सब ओर है।
अंतरा के शब्दों में,
वो शक्ति की क्या मिसाल है,
कलम उठा के साथ मे,
चला मानो अर्जुन का बाण है।
हम धन्य है करे धन्यवाद,
अंतरा के जो हम साथ है,
वो भूले सब भेद भाव,
एक छत्र में विराज है।
देश प्रेम की है भावना,
खड़े साथ सभी प्रांत है,
ये संकट बड़ा विशाल है,
हम फिर भी एक साथ है।

शब्दशक्ति

शब्दशक्ति मात्र शक्ति,
धर्म शक्ति बनगई,
वी बाण शब्द भेदी बनकर,
राष्ट्र शक्ति की ओर चले।
क्या खूब प्रयास रहा उनका,
वो प्रीत की रीत पर चलते,
संगठन की शक्ति में क्या बात,
सब को समझया आपातकाल।
घड़ी है कठोर मत निकलो घर से,
जीवन प्यारा संग परिवार रहो,
दे आहूति अपनी इस यज्ञ में,
तुम संसार के उपकारी बनो।
ये विषैला विष्णु जन्मा है,
हम सबने जाना ये समझा है,
करो पालन नियमो का इस दिन,
तरजाये गया हम सब का दिन।
तुम प्राणी अत्याचारी न बनो,
ये प्रण लो प्रलय में न उतरो,
उन शब्दों की शक्ति को,
इस देश के हितकारी पुरुषों।
अंतरा की बातों को जाना,
शब्दो के बाण को पहचान,
सहायक बना ये देश प्रेम,
अपने जीवन को फिर जाना।
वो धन्य है शब्द शक्ति भी,
जिसने अंतरा को माना,
वो धरा पर धार बन कर उतरी,
क्या खूब सजा के साज बनी।

प्रीत की रीत

प्रीति से सबकी प्रोत सजी,
इस जग में सुमन की,
कलिया खिली,
वो कलम की सुगंध से,
आज धरा पर लेखकों की,
लेखनी है सजी।
समय है कठोर,
महामारी का प्रकोप,
फिर भी न डरी,
वो कलम है चली,
जागरूक करने,
जाग्रति बनी।
कर क्रांति आज,
बन आहूति उतरी,
शब्दो ने सब को,
समझाया ये समय,
कठोर है ये बतलाया,
लड़ते पुलिस प्रशासन करी।
डॉक्टर भगवान बने उपकारी,
सेवा की भावना जगी मन मे,
नर तर बने फिर उपकारी,
अंतरा की ताकत को देखो,
लेखनी की शक्ति को देखो,

शब्दो के बाण चलाती वो।
जन जन जागृति को देखो
मानुष की रक्षा करे हम सब,
आज एक सूत्र में बंधे हम सब,
हर प्रान्त राज्य में बैठ कर,
एकता के तराने में सजे हम सब,
अंतरा की ये भूमिका है प्यारी।
निभाई जो इस विषम परिस्थिति,
में न्यारी वो जीवन दायनी बनी,
शब्दो से सजी ये मनचली,
वो प्रीत की रीत बड़ी प्यारी,
जिसने सजाई बन तलवार लड़ी,
इन विषम परिस्थिति में देखो,
अंतरा हमारी यार बनी।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

अंतरा शब्दशक्ति की आपातकालीन स्थिति में जन जागृति की पहल अपने शब्द रूपी सुमन द्वारा लोगों मे जागरुकता फैलाना घर बैठे इस महामारी से बचाव के लिए सराहनीय कार्य किया जा रहा है उसकी जितनी तारीफ की जाए उतनी कम है।

आज हमारा देश व पूरी दुनिया एक बड़े संकट से गुजर रही है जिससे बाहर आना बेहद मुश्किल मालूम पड़ रहा है चारो ओर सन्नाटा पसरा है लोग भूख से तड़प रहे है ये एक ऐसा दौर है जिसे कभी भी भुलाया नही जा सकता, इस दौर में हमे एक दूजे को सभालने के लिए हमे एक दूजे की सहायता करनी है और इसी प्रकार एक दूजे की सहायता के लिए मुहिम चलाई जा रही है।

अंतरा शब्दशक्ति एक ऐसी संस्था एक ऐसा नाम जिसने घर में बैठे समस्त कलम के कारीगरों को एक सार कर दिया तथा इस आपातकाल में अपने विचारों से लोगो में जनजागरण में जागृति फैलाने का कार्य कर रहे हैं। रचनाकार इस विषम परिस्थिति में भी अपनी लेखनी के द्वारा लोगो के मन मे इस महामारी से लड़ने के लिए उन्हें प्रोत्साहित कर रहे हैं। कोरोना वायरस जैसी महामारी पर रचनाकारो द्वारा साहित्य प्रेमियों द्वारा गीत, गजल, लघुकथा, लेख लिखकर जनमानुष को इस महामारी से अवगत कराया जा रहा है व इस से बचाव के तरीके भी बताए जा रहे है जो कि पढ़ने में रोचक व मन को मोहने वाले हैं।

मैं अंतरा शब्दशक्ति को इस सराहनीय कार्य करने के लिए सलाम करती हूं रचनाकारो द्वारा व साहित्य प्रेमियों द्वारा जो अपनी रचना के माध्यम से हमारे देश के सैनिक, पुलिस प्रशासनिक कार्य मे कार्यरत इस विषम परिस्थिति में सेवा दे रहे डॉक्टर, नर्स कर्मचारी व सफाई कर्मियों का प्रोत्साहन कर उत्साहवर्धन कर रहे है अंतरा शब्दशक्ति के बैनर तले किये जा रहे कार्य की इस आपातकाल जैसी विषम परिस्थिति में, मैं अंतरा शब्दशक्ति व सदस्यों की सराहना करती हूं।

रचनाकार

प्रज्ञा सुमेध जायसवाल

नागपुर (महा.)

Mobile - 8982390933

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-190-9

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/